International Journal of Applied Research 2018; 4(8): 182-183

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(8): 182-183
www.allresearchjournal.com
Received: 16-06-2018
Accepted: 23-07-2018

भागवत मंडल
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
भागवत मंडल
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

मैथिली उपन्यास मे वातावरणक महत्व

भागवत मंडल

सारांशः
मैथिली उपन्यास मे प्रमुख छःओ तत्वमे तेसर महत्वपूर्ण तत्व अछि, 'वातावरण'। उपन्यास विधा मे वातावरणक वैह स्थान अछि। जे कोनो चित्र मे पृष्ठ भूमिक रहैत अछि। उपन्यासक पात्रक व्यवहार समय आ परिस्थितिक अनुसार स्वभाविक रूपें बदलैत रहैत अछि। उपन्यासमे उपयुक्त, पृष्ठ भूमि उपस्थित करबाक साधन वातावरण होइत अछि। एकर प्रभाव उपन्यासक विभिन्न तत्व पर परैत अछि। एकर निर्माणक लेल लेखक कें वस्तु जगतक समुचित ज्ञान रहब आवश्यक होइत अछि। एकरा अन्दर देश–काल, रीति–नीति, वेश–भूषा प्रभृतिक वर्णन आवश्यक होइत अछि।।

प्रस्तावनाः
मनुष्यक स्वभाव होइत अछि जे ओ विभिन्न वातावरण मे अलग–अलग आचरण करैत अछि। जेना हाथक औंठी मे नगीना जड़ि देलाक बाद देखबा मे अबैत अछि। तहिना देश–कालक पृष्ठ भूमि मे चरित्रक व्यक्तिगत स्वभाविक विकास संभव भए सकैत अछि। वातावरणक लेल देश–कालक ज्ञान सेहो अपेक्षित होइत अछि।

वातावरण तथा वर्णन मे भेद होइत अछि। उपन्यास मे वातावरण उपस्थित करबाक साधन थीक उपयुक्त वातावरण। उपन्यास साहित्यक विकासक संग–संग वातावरणक निर्माण ढंग मे सेहो परिवर्तन भेल अछि। उपन्यासक प्रतिपाद्य विषय मानव जीवनक क्रिया–कलाप थीक। मनुष्यक विकास एक सामाजिक प्राणी रूप मे होइत अछि। अतः ओकर क्रिया–कलाप पर वातावरणक स्पष्ट प्रभाव परैत छैक। उपन्यासकार कें वातावरण निर्माण मे उपन्यासक पात्रकें गुण–दोषक ज्ञान रहब आवश्यक होइत छनि। ओ पात्रक गुणकें नजदीक सँ अवगत रहैत छथि।

मैथिली उपन्यासक आरम्भमे वातावरण निर्माणक कम चेष्टा रहैत अछि। पुनर्विवाह एवं चन्द्रग्रहण मे वर्णात्मक प्रवृतिक वर्णन भेल अछि– सासुकें मुइने दुनू दिआदनी स्वतंत्र भए गेलीह। पार्वतीकें अपना पढ़ाई पर गर्व रहनि। छोटकी दिआदनी उमेर मे हिनका सँ पैघ दुनू दिआदनी मे अड़हा–हिस्सी होमए लागल घरक सभ काज नाश होमए लागल। उपयुक्त पुनर्विवाह उपन्यास मे वातावरणक निर्माण कथानकक विकासक लेल भेल अछि।

चन्द्र ग्रहण उपन्यास मे गंगा स्नान जयबाक समय दरिभंगा टिशन यात्री सँ खच्चा–खच्च भरल छल। सभ दिश मुसाफिर आ कुल्ली सभ सँ वातावरण घोल फचक्का सँ अशान्त भ' रहल छल। सौदा आ समान बेच' बाला अलगे–शोर मचौने छल। गरम चाय, मुंगफली, बिड़ी, पान, सुपारी, अल्हुआ–मिठाई। सभ चारु दिस प्लेटफार्म कें दलमलित करैत छल। एहि कोलाहलक बीच मे कखनो ललना सभकें कोमल रस भरल मधुमय गीतो सुनाई परैत छल।

वस्तुक स्थिति सँ उपयुक्त चित्रणमे दरिभंगा टिशनक सजीव चित्र अंकित भेल अछि। गाम–देहातक लोककें शहर जयबाक काजे कोन कतौ सँ आयल एकटा तार पढ़ेबाक लेल झारखण्डी नाथ सँकुरी जाइत छथि। ओ कहिओ जीवन मे होटल नहि देखने छल। ओ होटलक भीतर देखलनि जे टौकना सभ चढ़ल छई। अढ़िया मे माँड़ पसाओल जा रहल छई। एकटा पिअर टौकनामे राहरीक दालि भ' रहल छई। गोटेक पसेरि काटल तरकारियो राखल छैक। आमक चटनी पिसा रहल छइ। ई सभ देखि कें ओकरा जीभ सँ पानि खसै लगलै। मसियौत भाई लग जाक' पुछलथीन्ह जे भाय यौ एहि ठाम कोनो भोज भय रहल छइ।

हास्य–व्यग्य सम्राट प्रो० हरिमोहन झा प्राकृतिक वातावरणक वर्णन करबा मे सेहो निपुण छथि– ''संध्याक समय छल। सूर्य रूसल जमाय जकाँ अस्ताचल गामी छलाह। नदी गंगाक हिलकोर देखि जेना जमायक रूसला सँ सासुक छाती जेना दलकैत हो एतबहि मे महेन्द्रू घाट सँ शंख नाद करैत पनिआ जहाज देखाइ परल। तखने यात्री सभमे कोलाहल मचि गेल। जेना मुरि कट्टा आबि रहल हो जहाज घाटो न लागल छल कि कुल्ली सभ सुग्रीवक दल अँका ओहि पर फानि चढ़ल। जेना कुकुर सभ जूठ पात पर चारू कात सँ झपटैत हो।''

प्रस्तुत उद्धरण मे जहाजक सजीव दृश्य अंकित भेल अछि। एहि प्रकारक वातावरणक निर्माण करबा मे लेखक पूर्ण सफल भेल छथि। वातावरणक निर्माण स्वभाविकताक संगे–संग वर्णन चातुर्यक सेहो पूर्ण अपेक्षा पाठककें रहैत छनि। साधारण वातावरणक निर्माण पाठककें संतुष्ट नहि करैत अछि। प्रस्तुत वर्णन मे लेखक पाठककें पूर्ण संतुष्टि प्रदान कयलनि अछि।

हरिमोहन झाक रचना मे सामाजिक एवं भौतिक दुनू प्रकारक वातावरणक निर्माण भेल अछि। कन्यादान मे अनेक तरहक दृश्यक सृष्टि कए लेखक अनुकूल वातावरणक निर्माण कयलनि अछि। एहि उपर्युक्त वातावरणक निर्माण मे लेखक पात्र एवं परिस्थितिक समुचित सामंजस भेल अछि। विभिन्न पात्रक चरित्र–चित्रणक हेतु विभिन्न परिस्थितिक निर्माणमे लेखकक क्षमताक परिचय प्राप्त होइत अछि।

वातावरणक निर्माण मे प्रकृतिक चित्रण, पात्रक कार्यव्यापार, वेश–भूषा आदिक समुचित ज्ञान रहब लेखककें आवश्यक होइत अछि।

प्रारम्भिक उपन्यास मे लेखक लोकनि वातावरण निर्माण मे केवल अपन वर्णनात्मक प्रवृतिक परिचय देलनि अछि। मुदा माधवी–माधव उपन्यास मे वातावरणक निर्माण हेतु उपयुक्त परिस्थिति, वेश–भूषा आदिक समुचित वर्णन भेल अछि।

प्राकृतिक वर्णन मे भगवान भास्कर अपन प्रखर रश्मिकें समटैत, लुक–झुक करैत, झखैत–झुकैत अस्ताचलक रास्ता छलैनि। दिन अस्त भ' गेल। संध्याक सुन्दर–सुहावन बेलाक आगमन भेल। शीतल हवा बहै लागल। जीवक प्राण बँचल। गरीब–मजदूर गृहस्थ अपन कार्य पर दौड़ल। जे दिन प्रचण्ड रौदक कारणें नहि कए सकल छलाह।

''नव बाबू लोकनि जे नवका हवा पानि मे पला रहल छलाह। लचीला छड़ी घुमबैत, रिस्ट–वाच चमकबैत, पम्पशु, जूता मचकबैत, अपन सुसज्जित वेश–भूषा देखबैत, हेंड़ मे मिझरायल, लचकैत, झुकैत बिहुँसैत केओ रमना दिश–केओ फुलवारी दिश तँ केओ टिशन दिस बिदा भेलाह। जतए तक नजरि जाइत अछि, नवयुवकें मण्डलीक चहल–पहल देखि परैछ।''

वातावरण निर्माण मे लेखक वस्तु स्थितिक स्वाभाविक चित्रण आकर्षक रूपें केलनि अछि। एहि मे लेखकक प्रयास सराहणीय अछि।

माधवी–माधव उपन्यास मे वातावरणक संदर्भ मे– "घटकक' नाक पर सँ उर्ध्व पुण्ड चानन, ताहि पर सँ त्रिपुण्डक भस्म भौंह लग एक लाल ठोप, साबिक जमाना वाला साठा पाग, जकर फेंच थपड़ल आ पाछु दिस उजड़ल लटकल छल। बाँस भरिक फराटी, नौसिदानी, देहपर एक फटल पुरान दोपट्टा, एक अंगपोछा, नाक पसरल आ नमलर ठौर छलनि।''

घटकक प्रस्तुत वर्णन स्वाभाविक एवं प्रभावोत्पादक भेल अछि घटकक सांगो–पांग वर्णन स्वाभाविकताक संग भेल अछि। वर्णनक चातुरिक कारणें सेहो आकर्षक भेल अछि।

वातावरणक लेल टिशनक वर्णन सेहो देखल जा सकैत अछि– ''गाड़ी पर चढ़ा–उतरीक क्रम भए रहल छल। एहि क्रम मे त्वंचाहन्च सेहो भए रहल छल। केओ मौटरी झोरा सम्हारैत छल। जेब कट्टा सेहो अपना धन्धाक ताक मे छल। केओ खरीद बिक्री मे लागल छल। कुली जोर–जोर सँ चिचिया रहल छल। जेन्टिल मैन सभ रिफ्रेशमेन्ट रूम मे गेलाह। भुखल यात्री सभ अपन अपन सामान खाय लागल छल। आ केओ सिगरेट पिबैत छल। सभ केओ अपना–अपना धुनि मे लागल छल।

उपन्यासक वातावरण सँ तात्पर्य जे ओहि परिस्थिति–परिवेशक सम्पूर्ण चित्रक वर्णन रहक चाही जेना कुमार आ भलमानुस उपन्यास मे सामाजिक जीवनक चित्र अंकित करबा मे वातावरणक चित्रण पूर्ण सहायक भेल अछि। वर्णन आकर्षक भेल अछि। कथानक पृष्ठ भूमिक रूप मे वातावरणक चित्रण घटना कें अविस्मरणीय बनबैत अछि।

भलमानुसक वर्णन मे वातावरणक निर्माण सेहो देखल जाइत अछि– जगदीशक घर सँ पूब मे क्षेमकान्त बाबूक एकटा नम्हर दलान छलनि। ओ दलान बाँसेक खाम्ह–खम्हेली आ टाट सँ घेरल छल। आ बड़ेरी–ठाठ झण्टा खर्ह सँ छारल छल। ओहि ठामक पाञ्च–सात घरक बैसाढ़ वैह दलान छलै। भिनसर सँ साँझ तक लोकक जमघट लगलै रहै। कौखन दू–चारिटा वृद्ध लोकनि सेहो आबि जाइत छलै। ओतुका कलरब तथा पिहकारी सँ परोपट्टा दलमलित भए रहल छलै।

निष्कर्षः

उपन्यासक वातावरणक चित्रण एहि तरहें कएल गेल देखल जा रहल अछि। मिथिलाक लोक सभ धर्म भीरू बनल, भाग्यक भरोसे दिन भरि हा–हा, हि–हि, क गप्प सप्प करैत, सतरंज खेलैत रहैत अछि। केओ–केओ भांग घोटैत रहैत अछि। एहि तरहक वातावरण सँ मैथिल लोकनिक वस्तु स्थितिक पता लगाओल जा सकैत अछि। एहि सभ दृश्यक उपरान्तो समाजक आर्थिक स्थितिक बोध सेहो भए जाइत अछि।

संदर्भः

1. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. अमरेश पाठक
2. मैथिली उपन्यास आ उपन्यासकार– भूपेन्द्र कुमार चौधरी, प्रकाशन ग्रन्थालय, दरभंगा
3. मैथिली साहित्यक रूपरेखा– सम्पादक– बासुकीनाथ झा, शेखर प्रकाशन, पटना
4. मैथिली साहित्यक इतिहास– डॉ. दुर्गानाथ झा ''श्रीश'', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा
5. अक्ष्य पुरुष, सम्पादक किशोर केशव, वन्दना किशोर– शेखर प्रकाशन, पटना